7/1/1966 शुक्रवार प्रातः क्लास

भगवान पाठ पढ़ाते हैं; क्योंकि पाठशाला है। किसकी पाठशाला है? भगवान की पाठशाला है। कौन–सा पुस्तक पढ़ाते हैं? तो कहते हैं गीता की पाठशाला है। ऐसे समझाते हैं ना। अब ये है गीता की पाठशाला। भगवान बैठ करके पढ़ाते हैं। तो पाठशाला में ज़रूर बहुत ही बच्चे बैठे हुए होंगे। कोई बाहर में लश्कर नहीं होंगे, न कोई लश्कर के बीच में कोई गाड़ी–घोड़े वाला होगा या उसमें कोई बैठा होगा। भगवान बैठकर समझाते हैं कि ये है एक... जिसको शास्त्र कहा जाता है। उनमें है ये मूर्खता। अगर शास्त्रों में मूर्खता न होती तो क्यों कहा जाता है कि ब्रह्मा के मुखकमल से परमपिता परमात्मा सभी वेदों,शास्त्रों,ग्रंथों का सार समझाते हैं। उसमें गीता भी आ गई। कहाँ समझाते हैं? पाठशाला में। तो ये पाठशाला हुई ना। इसमें भगवान बैठ करके समझाते हैं। इन वेद,यज्ञ,तप,दान,तीर्थ वगैरह से कोई मुझे नहीं मिलते हैं। इसलिए मैं तुमको, क्यों नहीं मिल सकते हैं, वो बैठ करके सार समझाते हैं। तो बैठे–2 पहले ही समझाते हैं कि पहले ते पहला भारत में भक्तिमार्ग का सबसे नंबर वन शास्त्र है सर्वशास्त्रमयी शिरोमणि श्रीमतभगवद्गीता अर्थात् भगवान के मत की गीता। श्री माना श्रेष्ठ। अभी पहले तो प्रश्न उठता है। तो श्रीमत मनुष्य की, ऐसे तो नहीं होता है ना (कि) कोई जनावर की मत है। अभी श्रीमत भगवान की, मनुष्य की नहीं कहते हैं। अभी भगवान किसको कहें पहले ये प्रश्न उठता है...। अभी भगवान तो कहा जाता है निराकार को। भगवान और कोई को भी नहीं कहा जा सकता है। तो बाप बैठ करके पाठशाला में समझाते हैं। बच्चे बैठे हुए हैं। अच्छा, ये अभी जानते हो कि अभी पढ़ाई तो वृद्धि को पा ली है और बहुत ही सेन्टर्स हैं जिसमें भी ये बात समझना है कि ज़रूर पाठशाला थी, जिसमें बैठकर भगवान एक को तो नहीं सुनाएँगे ना सभी वेदों,ग्रंथों ....। तुम देखो कितने सुनते हो! अभी सैंकड़ों–हज़ारों सुनते हैं। पहले थोड़े सुनते थे, अभी आहिस्ते–2 बहुत होते जाते हैं। कौन? भगवान को सुनने के लिए। कौन सुनेंगे भगवान को? भगवान अपने बच्चों को सुनाएँगे और किसको सुनाएँगे! यूँ बच्चे तो सभी हैं। सभी बच्चों को सुनाना है तो सभी बच्चे इकट्ठे कैसे पाठशाला में बैठ सकते हैं? तो कहते हैं कि नहीं, जो आ करके पहचानते हैं... क्योंकि पहचानना है ना। पहले–2 तो एक/दो पहचानते हैं, पीछे चार,पाँच,आठ,दस,बीस ऐसे बढ़ता जाता है ; क्योंकि बाप किसको समझाते हैं ? प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा किसको सुनाते हैं? ये हो जाती है ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण और ब्राह्मणियों की पाठशाला। नहीं तो पाठशाला में कौन बैठते हैं? भारत में पाठशाला में तो बहुत मनुष्य हैं ; परन्तु पाठशाला में खास कौन बैठते हैं ? उनके जो बच्चे हैं ज़रूर वही बैठेंगे। बाप बैठकर समझाते हैं कि बच्चे जो मुझे जानते हैं कि बरोबर बाप बैठ करके समझाते हैं कि मैं तुम सभी पतित को. ... तो बच्चों को भी पतित कहते हैं ना। पतितों को हम पावन बनाने आए हैं। किस द्वारा? किसके मुख द्वारा? प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा। तो देखो, तुम बनते हो पहले–2 ब्रह्मा की मुखवंशावली संतान। बच्चों को सुनाते हैं ना। तो बरोबर ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण धर्म भी स्थापन करना होता है। जैसे क्राइस्ट द्वारा क्रिश्चियन धर्म। क्राइस्ट तो एक था ना। तो ब्रह्मा भी तो एक होगा ना। पीछे देखो कितना बने हैं! वो कैसे बने? वो तो ऊपर से आते हैं, एक,दो,चार को बैठ करके शिक्षा देते हैं, पीछे जब वृद्धि को पाती है.. तो ऊपर से जो क्रिश्चियन धर्म वाले आते हैं वो वृद्धि को पाते रहते हैं। यहाँ फिर क्या होना है? यहाँ जो पतित शूद्र धर्म वाले हैं उनको पहले बैठ करके ब्राह्मण धर्म वाले बनाते हैं। तो सिद्ध हो जावे कि परमपिता परमात्मा (ने) संगमयुग पर पहले ब्राह्मणों का धर्म स्थापन किया, पीछे उन ब्राह्मणों को, ब्रह्मा के कुमार और कुमारियों को बैठ करके सुनाया। तो देखो, अभी ये सब सुनते कौन हैं ? ब्रह्मा मुखवंशावली; क्योंकि ब्राह्मण चाहिए ना और फिर यज्ञ भी है। यज्ञ में भी तो ब्राह्मण चाहिए। तो ये हुए ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण और संगमयुग के। वो ब्राह्मण तो हैं ही कलहयुग के या द्वापरयुग के। ये हैं संगमयुग के ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ। उनकी बनती है पाठशाला। उनको बैठकर समझाते हैं। पहले–2

ये समझाते हैं कि पहले ये तो समझो कि ये पाठशाला भगवान की है या कृष्ण की है; क्योंकि वो समझाते हैं ना। तो सार समझाता हूँ। सार किसका समझाया जाता है, जो उन शास्त्रों से कुछ भी नहीं समझते हैं। तभी तो बाप कहते हैं ना– बच्चे, तुम इतने वेद,शास्त्र,ग्रंथ पढ़ते हो, पढ़ते आए हुए हो; परन्तु इनसे तुम दुर्गति को पाए हो; क्योंकि इनमें कोई सद्गति वा जीवनमुक्ति का रास्ता है नहीं यानी मनुष्य मुक्ति वा जीवनमुक्ति चाहते हैं। और तो कोई दिल में नहीं रहता है ना। अच्छा, कोई कहते हैं मन की शांति चाहते हैं। देखो, आजकल बॉम्बे में मन की शांति के लिए वो पुस्तकड़ियाँ निकालती हैं कि मन की शांति एक सेकेण्ड में या ऐसे कुछ लिखते हैं। अभी तो बच्चों को समझाया हुआ है कि मन–बुद्धि ये हैं आत्मा की सूक्ष्म कर्मेन्द्रियाँ और ये हैं स्थूल। अभी मन सो तो है आत्मा का। ऐसे क्यों नहीं कहा जाए कि आत्मा शांति चाहती है। मनुष्य ही आ करके कहते हैं कि मेरे मन को, ऐसे नहीं कहते हैं कि मुझ आत्मा को शांति चाहिए; क्योंकि आत्मा को अशांति है। आत्मा में जो मन है वो अशांत रहता है; क्योंकि जो कहावत होती है दोहे में वो सब कहते रहते हैं, समझते तो कुछ नहीं हैं ना, पत्थरबुद्धि हैं। तो बाप बैठकर समझाते हैं कि मन शांति नहीं चाहता है, आत्मा चाहती है कि मुझे मन बड़ा तंग करता है, विकल्प–संकल्प यहाँ–वहाँ... इसको शांति कैसे मिले? अभी आत्मा के मन को शांति कौन देवे? आत्मा तो नहीं देवे ; क्योंकि सभी आत्माओं का मन अशांत है। सन्यासी भी आते हैं, बोलते हैं कि मन की शांति... यानी आत्मा में जो मन है, तो ऐसे नहीं कहते हैं कि मुझ आत्मा के मन को शांति कैसे मिले? तो भल कहें– भई ठीक है, ये राइट बोलते हैं; पर ये राइट तो कुछ भी जानते ही नहीं हैं इन सब बातों से। तो बाप बैठकर समझाते हैं। अभी कोई कहे मेरे मन को शांति चाहिए। आत्मा कहती है मेरे मन को। तो ये कहती तो आत्मा है ना, शरीर तो नहीं कहता है। शरीर में तो मन है नहीं। ये है आत्मा में मन। अभी आत्मा जो पतित बनी हुई है; क्योंकि कहा ही जाता है पतित आत्मा अशांत में है, पावन आत्माएँ शांत में हैं। भारत में, जब भारत पावन था तो जो भी आत्माएँ थीं, वो सतयुग में या निर्वाणधाम में शांत थीं। ...कहती है आत्मा कि हम सतयुग में शांत भी थे और सुखी भी थे और हम आत्माएँ जब अपने घर निर्वाणधाम में थे तो वहाँ शांत थे यानी हमारा मन शांत था। ऐसे कहेंगे ना। अब ये कौन कहता है कि मेरे मन को शांति...। देहअभिमानी आ करके देहअभिमान से कहते हैं कि मेरे मन को शांति... । अभी देह को तो कोई मन है नहीं। आत्मा को मन है अर्थात् उनको आत्मा का ज्ञान भी नहीं है। देह का ज्ञान है कि मेरे को शांति...। अरे, ''मेरे में'' तुम जो शरीर हो वो कहते हो ना। तुम ऐसे तो(नहीं कहते हो) मेरी आत्मा को शांति चाहिए। शांत आत्मा, अशांत आत्मा। आत्मा अशांत हो गई है, ऐसे कहेंगे। मन अशांत हो गया है वो तो कहने का नहीं है। ऑरगन के लिए थोड़े ही कहना चाहिए कि मन अशांत हो गया है। तो पहले–2 तो शांति का ही बताना चाहिए कि शांति तो चाहिए आत्मा को। उसकी आत्मा में जो कर्मेन्द्रियाँ हैं मन–बुद्धि, वो अशांत हैं। क्यों अशांत हैं? क्योंकि ये रावण का राज्य है; इसलिए अशांत हैं। अच्छा, इनको शांति चाहिए तो शांति का सागर तो बाप है और सबको चाहिए, एक को तो शांति नहीं चाहिए ना। तो बरोबर सबको शांति देने वाला तो वो परमपिता परमात्मा है ना, जिसको हम कहते हैं कि ये जो दुःख है या अशांत है तो चलो, शांतिधाम में चलो। भले तुम यहाँ भी शांत हो सकते हो, अगर अपने शरीर से अपन को अलग कर देंगे कि हम तो आत्मा हैं, हमारा तो स्वधर्म है ही शांत; परन्तु हम शांत तब हैं जबकि हम शांतिधाम में हैं और फिर जब हम सुखधाम में हैं तब भी मेरे को सुख है। ऐसे नहीं कहेंगे कि आत्मा को शांति है। शांति तो सच्ची वहीं है जहाँ कि हम रहते हैं, कुछ बोलते नहीं हैं यानी कर्मेन्द्रियाँ ही नहीं हैं। अच्छा, फिर है सुख, फिर है दुःख; क्योंकि आत्मा को तो शरीर की कर्मेन्द्रियों से काम करना होता है ना। हाँ, ये ज़रूर है कि आत्मा को वहाँ शांति भी है तो सुख भी है, ऐसे भी कह सकते हैं; परन्तु वास्तव में लॉ मुज़ीब वो शांतिधाम, वो सुखधाम; क्योंकि वहाँ कर्मेन्द्रियों को कोई भी काम

तो नहीं करना पड़ता है ना। वहाँ कोई भी दुःख की तो बात ही नहीं है ना। तो वहाँ शांति भी है तो सुख भी है। यहाँ अशांत है तो दुःख है। तो दुःख को फिर कहा जाता है अशांत है। सुख में तो शांत है ही ज़रूर। तो अब ये सब चीज़ कितने में मिलते हैं ? मन को चाहिए ना यानी आत्मा कहती है मेरे मन को शांति चाहिए। बोलते हैं– हाँ, बेहद की शांति तो एक सेकेण्ड में मिल सकती है। अगर थोड़े समय के लिए शांति तो यह तो तुम (अपने) स्वधर्म को याद करो, हम आत्मा हैं, हमारा आत्मा ही स्वधर्म है ; परन्तु यहाँ रावण द्वारा दुःख तो ज़रूर मिलना है ; क्योंकि मनुष्य विकर्म करते हैं। वहाँ कोई विकर्म तो होता ही नहीं है। ...इसलिए आत्मा दुःखी होती है। आत्मा के मन को दुःख होता है। जब मनुष्य कहते हैं– मेरे मन, मेरे मन, तो मनुष्य देहअभिमान में आकर कहते हैं। अभी मन की शांति। वास्तव में अभी शांति चाहिए सारी दुनिया को। कोई एक के मन को शांति हो तो कोई काम नहीं चलता है, दूसरा अशांत कर देंगे। अभी भी बैठे रहो, अच्छा कहाँ भी बैठे रहो, कोई आएगा, आ करके कुछ उल्टा–सुल्टा बोल दिया... अशांति हो जाएगी। तो उल्टा–सुल्टा क्यों बोलते हैं? क्योंकि रावण–राज्य है। इसलिए यहाँ मन को शांति मिल ही नहीं सकती है। वहाँ बैठे हैं, वहाँ है ही शांति। वहाँ मनुष्य को कोई ऐसे आकर अशांत करते ही नहीं हैं। ...आत्मा के मन को कोई दुःख होता ही नहीं है। यहाँ आत्मा के मन को तो दुखाने वाली माया बैठी हुई है। तो ये सुख और दुःख। अभी सुख तो देते हैं बाप। कभी भी कोई सतयुग में नहीं कहेंगे कि मुझे मन की शांति चाहिए या मेरी आत्मा के मन को शांति चाहिए– वो भी नहीं कहेंगे; क्योंकि वहाँ सुख भी है तो शांति भी है। यहाँ अशांति भी है, तो दुःख (भी) है; परन्तु ये तो लॉ है ना। जब दुःख है तो ज़रूर अशांति है। सुख है तब ज़रूर शांति है। तो ज़रूर ये सुख और शांति है ही सतयुग में। यहाँ तो है ही दुःख और अशांति। अभी दुःख और अशांति सो तो सारी दुनिया में है। अभी इस दुःख–अशांत को शांत और सुख कौन बनावे? तो देखो, है ना बरोबर, भगवान बिगर यानी बाप बिगर ये वर्सा कोई दे ही नहीं सकता है। बाप ने ये वर्सा दिया और बाप तो है ही रचता तो वो रचेगा ही स्वर्ग। स्वर्ग में तो है ही शांति, सुख, पवित्रता सब कुछ। ये रावण–राज्य में (हैं) ; इसलिए है दुःख। फिर ये समझाना होता है ना। अच्छा, अभी कैसे समझावें? क्यों ब्रह्माकुमारियों को कहाँ भी ये भाषण करने नहीं देते? क्योंकि तुम तो गीता के ही समझाने वाले हो ना। तुम कह तो सकते हो ना– मुझे गीता के उपदेश देना है या गीता पर समझानी देनी है। तो कभी कोई मना नहीं कर सकते हैं। ये क्यों इनको अलाउ नहीं करते हैं? देखो, जैसे बॉम्बे में वो प्रेमकुटी है। बहुत ही ऐसे स्थान हैं जहाँ साधु,संत,महात्मा बाहर से कोई भी आते हैं तो या तो जो उनके हॉल बने हुए हैं, कोई प्राईवेट हैं, कोई का अपना–2 बनाया हुआ है, बहुत हैं, ये भारत भवन है, यह इनका बनाया हुआ....बड़ा हॉल मिलता है। (किसी भाई ने कहा– के. मुंशी का) अच्छा, वहाँ भाषण करने क्यों नहीं देते हैं? साधु–संत कोई भी आवे तो भाषण तो सभी करते हैं आकर। कोई सन्यासी को कभी नहीं कहेंगे कि तुमको 8 सौ रुपये देना पड़ेगा या 50 रुपया देना पड़ेगा। कभी भी नहीं। फिर तुमको क्यों नहीं करने देते हैं? तुम भी कहाँ भी जा सकती हो। जा करके वो (जो) हॉल के बड़े होते हैं (उनको) बोलो, हमको गीता का भाषण करना है।.....जबकि सन्यासी,साधु,संत आते हैं तो हमारे से फी क्यों माँगी जाती है? हम फ्री करते हैं, हम कोई पैसा भी नहीं लेते हैं। वो तो फिर भी कुछ पैसा ले जाते हैं, हम पैसा भी नहीं लेते हैं। गीता पर भाषण करेंगे। तो झट गीता पर भाषण करके और पहले ही पहले तुम बच्चों को समझाना है कि पहले समझना है कि भगवान किसको कहा जाता है। गीता सुनाने वाला, ज्ञान सुनाने वाला, सहज राजयोग सिखलाने वाला...यानी मनुष्य से देवता बनाने वाला, नर से नारायण बनाने वाला... क्योंकि ये राजयोग है। योग कौन–सा? भगवान का। अभी कौन था? भगवान किसको कहा जाए? तो फिर ये समझाया जाता है कि बरोबर वो तो परमपिता, गॉड फादर है। फादर माना सबका ही फादर है, सबका पिता है। सबका पिता हम ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को भी नहीं

कह सकते हैं। तो उन लोगों को पहले समझानी देनी पड़े ना कि भगवान कौन है? ये जो गीता में कहा जाता है श्रीकृष्ण भगवानुवाच, तो क्या वो भगवान है या निराकार भगवान है? तो फिर महिमा करनी पड़ती है– वो है ज्ञान का सागर, पतित–पावन, लिबरेटर, गाइड, कुछ अंग्रेजी (में) कुछ ये भी और सबका पिता, क्रियेटर, रचता। रचता है तो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को रचते हैं तो उनको भी देवता कहा जाता है। फिर आओ मनुष्य सृष्टि में, तो दैवी गुणों वाले मनुष्य होते हैं। उनको भी तो भगवान नहीं कहा जाए ना; क्योंकि दैवी गुणों वाले मनुष्य ये सतयुगी नई रचना है। तो ज़रूर जो नई रचना है उसको रचने वाले ने रचा होगा। कैसे रचा है सो हम बैठ करके समझाते हैं कि भगवान बोलते हैं कि मैं कैसे रचता हूँ। ज़रूर ब्रह्मा,विष्णु,शंकर...। अभी ब्रह्मा चाहिए, प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए। तो ज़रूर प्रजापिता ब्रह्मा सो भी तो गायन है कि बरोबर परमपिता परमात्मा प्रजापिता। प्रजापिता तो यहीं होना चाहिए। सूक्ष्मवतन में नहीं होना चाहिए। तो आते हैं पतित दुनिया में, तो ज़रूर कोई पतित होगा जिसका नाम ब्रह्मा गाया जाता है। प्रजापिता तो ज़रूर यहीं होगा। वो प्रजापिता कौन है, बाप बैठ करके वो समझानी देते हैं। ये जो प्रजापिता ब्रह्मा है वो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। अर्जुन को नहीं कहा कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। नहीं, वो है ही ब्रह्मा। थ्रू ब्रह्मा हम स्थापना करते हैं। अभी थ्रू अर्जुन तो कहाँ लिखा हुआ नहीं है, जो उनको कहें कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। नहीं, ये तो ब्रह्मा को कहेंगे ना ; क्योंकि ब्रह्मा मुख द्वारा...। अर्जुन की तो कोई बात ही नहीं है। यहाँ तो ब्राह्मण चाहिए। त्रिमूर्ति में भी कोई अर्जुन नहीं लगा हुआ है, ब्रह्मा लगा हुआ है। ...तो वो ब्रह्मा को कहते हैं– तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। तुम पहले सो देवता थे, अब सो शूद्र बने हो। तुम्हारा अंतिम जन्म। बहुत जन्म के अंत का अंत सो भी तो पतित जन्म हुआ ज़रूर। पतित जन्म हुआ तो ज़रूर पतित के शरीर में प्रवेश करके उनका नाम फिर ब्रह्मा रख देते हैं; क्योंकि फिर वो तो कनवर्ट होते हैं ना। कनवर्ट हुआ, नया जन्म हुआ तो नया नाम ही पड़ेगा। तो बाप ने उनका नाम ब्रह्मा रख दिया है और जो–2 भी ब्राह्मण बनते हैं, ये क्लास बना करके, उनको बैठ करके समझाते हैं। अभी वो है ज्ञान सागर, उनसे ज्ञान गंगाएँ चाहिए। ...तो किसने ये धारणा की? किसमें प्रवेश किया? ज़रूर ब्रह्मा में प्रवेश किया, फिर उनसे बैठ करके ये ज्ञान–गंगाएँ निकलीं। ये तो मनुष्य की बात है ना। कोई नदियों की तो बात नहीं है ना। तो देखो, भगवान बैठ करके समझाते हैं कि हे बच्चों! अब ये तुम्हारा बहुत जन्म के अंत का जन्म है और ये झाड़ भी जड़जड़ीभूत अवस्था को पाया है। भक्तिमार्ग की भी आयु पूरी हुई है। नई दुनिया की आयु भी आ करके पूरी हुई है, पुरानी बनी है। अब मैं आया हूँ फिर नई दुनिया स्थापन करने कल्प पहले मुआफिक। कौन–सा? ब्रह्मा द्वारा स्थापना आदि सनातन देवी–देवता धर्म की। तो देखो, मैं तुमको बैठ करके फिर वही जिसको तुम गीता कहते हो, सो मैं भगवान बैठ करके समझाता हूँ। वो गीता तो मनुष्यों की बनाई हुई है। उनमें तो पहले ही भूल की है– श्रीकृष्ण भगवानुवाच। फिर ये भागवत वगैरह वो सभी झूठ बात है; क्योंकि ये जो ब्राह्मण हैं, ब्रह्मा की संतान; क्योंकि ब्राह्मण धर्म स्थापन करते हैं ना। अभी ब्राह्मण तो अहिंसक। बाप बैठ करके लड़ाई सिखलाएँगे क्या? नहीं। बाप तो अहिंसा यानी नॉनवायलेन्स।...बाबा बैठ करके योगबल सिखलाते हैं। कहते हैं मेरे साथ योग लगाने से तुम पापों से मुक्त हो जाएँगे और मेरे को याद करते–2 इस याद की यात्रा से तुम मेरे को प्राप्त करेंगे और यात्रा से तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा; क्योंकि सतोप्रधान तुम्हारी आत्मा सो 84 जन्म भोगते शुरू से लेकर, सीढ़ी उतरते–2 अभी पतित बन गई है, जिसको आयरन एज कहा जाता है, खाद पड़ गई। अभी तुम्हारी खाद कैसे निकले? तुम पावन आत्माएँ कैसे बनो? आत्मा का अभी काम है परमात्मा बाप को, जो सर्वशक्तिवान है, उससे योग लगावे, उसको याद करे, जिसको ही भक्तिमार्ग में प्राचीन योग कहा जाता है। तो बाप को याद करने से तुम्हारा विकर्म विनाश होता जाएगा, और कोई भी उपाय है नहीं; क्योंकि पतित–पावन को याद

करते हो, तो पतित–पावन हो स्वर्ग में जाना है। अभी ऐसे तो है नहीं कि सागर से निकली हुई नदियों या पानी में स्नान करने से कोई पतित, पावन दुनिया में चले जाते हैं। ऐसे तो हो ही नहीं सकता है। पावन दुनिया में... एक तो पवित्र बनना है, दूसरी, पढ़ाई पढ़नी है; क्योंकि जो समझाते हैं सारी सृष्टि का समाचार वो भी तो सुनना है ना। तो अभी ये सुनना है, सेकेण्ड में जीवनमुक्ति जिसको कहा जाता है। तो देखो, एक तो तुम पाठशाला ले सकते हो, कहाँ में भाषण कर सकते हो। दूसरा, हम समझावें कि ये जो गाया हुआ है कि एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति, तो ये एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति जीवनबंध से अर्थात् जीवनमुक्त है सतयुग, जीवनबंध है कलहयुग। तो एक सेकेण्ड में क्या एक को ही जीवनमुक्ति या अनेकों को? बुद्धि तो कहती है कि कहते हैं जनक को एक सेकेण्ड में मुक्ति। भला खाली जनक मुक्तिधाम में जाकर क्या करेगा! ज़रूर जनक तो राजा था। वो बहुत ही मनुष्य था। वहाँ भी जनक आना चाहिए। तो जनक वहाँ राजा बनता है, जिनकी बच्ची सीता होती है। कोई एक तो नहीं सीखा होगा ना। वो तो बाप आ करके सर्व को सद्गति या सर्व को जीवनमुक्ति देंगे। तो बाप कहते हैं योग और पढ़ाई से सबको जीवनमुक्ति देना ये तो मेरा काम है ना। तो देखो, तुम समझाएँगे ना– योग से मनुष्य एवर हेल्दी बनते हैं, एवर निरोगी बनते हैं, आयु बड़ी हो जाती है। अभी ये योग की हॉस्पिटल अच्छी या ये हॉस्पिटल्स अच्छी! क्योंकि यहाँ भगवान आ करके योग सिखलाते हैं। योग की जो इतनी महिमा है, सभी योगाश्रम खोलकर बैठते हैं और महिमा करते हैं भारत के प्राचीन योग की। अभी प्राचीन योग से क्या हुआ था, मनुष्य तो जानते नहीं हैं। उस प्राचीन योग से भारत एवर हेल्दी, सतयुग के लिए बिल्कुल ही निरोगी पद पाया था। अभी ये जो योग यहाँ सिखलाते हैं उसमें तो कोई एवरहेल्दी बन भी नहीं सकते हैं। तो बाप ने क्या सिखलाया था? बरोबर योग सिखलाया था। प्राचीन भारत का योग मशहूर है। उस योग से, याद से हम एवर हेल्दी सतयुग के लिए बने हैं; क्योंकि नई दुनिया में, सतयुग में एकदम बड़ी आयु थी। अकाले मृत्यु थी ही नहीं। तो तुम बच्चों को वहाँ जा करके ऐसी बातों से ये समझाना है ना कि प्राचीन योग क्यों नामी–ग्रामी है ; क्योंकि भगवान ने आ करके सिखलाया। तो योग से तुम सदैव निरोगी बनेंगे, सदैव हेल्दी बनेंगे और फिर जो ये स्वदर्शन–चक्र का ज्ञान है, जो ये दिया गया है विष्णु को...। अभी उसको कहा ही जाता है स्वदर्शनचक्र। कोई चक्र तो नहीं है जिससे गला कटे। यहाँ लिखा ही है स्वदर्शन यानी स्व को इस सृष्टि–चक्र के आदि,मध्य,अंत का मालूम पड़ता है; इसलिए इसका नाम रखा ही गया है स्वदर्शन चक्र। ...स्वदर्शन नाम क्यों रखा है? कोई अर्थ तो होगा ना। स्व माना आत्मा को दर्शन। किस चीज़ का दर्शन? अरे, आत्मा को दर्शन एम–ऑब्जेक्ट का यानी परमात्मा का और फिर उनकी नई रचना का और फिर रचना कैसे फिरती है, जिसको कोई नहीं जानते हैं। कोई से भी पूछो कि रचता और रचना के आदि,मध्य का ज्ञान सुनाओ तो बोलते हैं हमको मालूम नहीं है। तो जब तलक भगवान न समझाए तब तलक हम कैसे समझें। एक तो बाप कहते हैं कि डरने की तो कोई बात नहीं है। कोई भी धर्म वालों के जो–2 भी आश्रम हैं, जो–2 भी कोई के हॉल बने हुए हैं, वहाँ तो तुम जाकर कहते हो कि हम गीता पर समझाना चाहते हैं। हम मुख्य बात समझाएँगे कि गीता का भगवान कौन था? क्या गीता का भगवान श्रीकृष्ण था या गीता का भगवान, भगवान था, जिसको गॉड फादर कहा जाता है ? सारी दुनिया गॉड फादर कहती है यानी क्रियेटर, पिता कहती है। अभी कृष्ण को तो भगवान नहीं कह (सकेंगे)। भगवान तो एक है। कोई भी आरग्यू करे तो बोलें– हम आए हैं गीता पर समझाने के (लिए) और ये समझाने कि गीता का भगवान कौन था– कृष्ण वा भगवान? क्योंकि सारी दुनिया कृष्ण को तो भगवान कह ही नहीं सकेगी। भगवान को, गॉड फादर को तो सभी कहेंगे। हम उसके ऊपर गीता का ज्ञान समझाने आए हैं। ... उनको समझाना होता है कि ये मुख्य बात है, जबकि भगवान से जीवनमुक्ति मिली थी तो ये जो गीता पढ़ते आते हैं उनसे मुक्ति क्यों नहीं मिलती है? क्यों सब जीवनबंध हो

गए हैं? ये तो गीता सुनते हैं ना। तो क्या फर्क है मनुष्य की गीता सुनाने में और भगवान की गीता सुनाने में? बाबा बोलते हैं वो फर्क होगा ना। भगवान सुनावे और पतित मनुष्य गीता सुनावे उसमें तो रात–दिन का फर्क होगा ना। तो हम बैठ करके समझाते हैं। ये चाहिए ये महारथियों का काम। कोई बच्ची ऐसी कच्ची–पक्की नहीं बात कर सकती है। बुजुर्गों से बात करनी होती है या जो हेड्स होते हैं। एक तो ये भी ज़रूर है, दूसरा जहाँ भी समझें, ये बॉम्बे में बोलते हैं ये पाठ करते हैं तो तुम भी एप्लाई करो ना कि हम किसकी भी निंदा नहीं करेंगे, हम सिर्फ ये समझाएँगे कि गीता का भगवान कौन– शिव निराकार जिसको सभी भगवान कहते हैं या कृष्ण जिसको सभी भगवान नहीं कहेंगे? क्योंकि वो है सर्वशास्त्रमई शिरोमणि गीता, जिससे भारत को ये स्वर्ग का राज्य मिला है, भारत हीरे जैसा बना है। तो भला जब गीता से भारत हीरे जैसा बना तो ये गीता पढ़ते–2 कौड़ी जैसा क्यों बने हैं? क्योंकि ये थोड़ी–2 प्वाइंट्स मजबूत...। बाबा तो बहुत प्वाइंट्स में प्वाइंट्स मिलाते रहते हैं ना। उनमें थोड़ी प्वाइंट्स बुद्धि में बैठा देना चाहिए। अब वास्तव में ये महारथियों का काम है, कोई घोड़ेसवारों का काम नहीं है। प्यादों की तो बात ही छोड़ दो। तो कहाँ भी जा करके भाषण करो। ग्रंथ में जावें, वहाँ भी जाकर बोलें– ये गीता है सर्वशास्त्रमई शिरोमणि और ये सभी हैं उनके पैदा हुए बच्चे ; क्योंकि पहले–2 धर्म ही है गीता से, भगवान से, ये देवी–देवताओं का धर्म स्थापन हुआ है। पहले–2 देवी–देवता राज्य करते थे ना। तो हम वो भी समझाएँगे कि कहाँ चले गए? जो देवी–देवताओं का राज्य भारत स्वर्ग था, अभी नर्क क्यों बन गया है? फिर स्वर्ग कैसे बनता है? ये भी हम समझा सकते हैं। भारत जो स्वर्ग था और सिर्फ एक देवी–देवताओं का धर्म था। अब ये भारत नर्क और इतने धर्म कैसे होते हैं, ये दुनिया की स्थापना कैसे होती है, वृद्धि को कैसे पाते हैं, फिर विनाश कैसे होता है, फिर रिपीट कैसे होता है, मैं ऐसी–2 बातें समझाऊँगा। किसको समझाएँगे? ज़रूर जो सेक्रेटरी होगा। फिर वो बोलेगा– अच्छा, हम बड़े सेक्रेटरी को बोलेगा। वो बोलेगा हम गीता पर समझाना चाहते हैं। जैसे दूसरे साधु,संत,महात्मा समझाते हैं हम समझाएँगे और उसमें मुख्य बात हम यही समझाएँगे ये सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। हम सबकी, परमपिता परमात्मा की भी जीवन कहानी सुनाएँगे। परमपिता परमात्मा जो निराकार है उनकी जीवन कहानी सुनाएँगे; क्योंकि हम फिर भी उनके बच्चे तो हैं ना। अगर बच्चों को बाप की जीवन कहानी का पता नहीं हो तो वो तो जनावर ठहरे; क्योंकि हैं तो मुख्य–2 बातें ना। अच्छा, ये तो हुआ बच्चों को जो महारथी हैं, उनको कैसे हम जा करके भाषण करें, वृद्धि कैसे पावें। तो वो जा करके समझाना चाहिए, फिर रिपोर्ट भी करना चाहिए। अच्छा, दूसरी बात फिर रहती है कसम की बात, जो उठाई थी कि गीता का भगवान कौन। अभी ये तो जजों को भी ज़रूर समझाना चाहिए। ऐसे नहीं कि बस एक दफा कोई ने कुछ न सुना... । सुना क्या? यहाँ तो देखो छः–2, आठ–2 महीने, 12 महीने सुनाते हैं तब किसको भगवान का निश्चय होता है। वहाँ एक ही दिन में कोई एक ही दफा किसको कहने से थोड़े ही होगा। फिर अभी वो बात को उठाना चाहिए। सो नहीं जाना चाहिए; क्योंकि गाया हुआ है ना– जिन सोया तिन खोया यानी प्वाइंट उठाकर जो मुख्य प्वाइंट है...वो फिर भी उठाना चाहिए कि गीता का भगवान कौन, जिनका कोर्ट में भी गीता उठाकर कसम उठाते हैं और फिर कहते हैं भगवान को हम हाज़िर–नाज़िर जानकर...। किसको? किस भगवान को? गीता क्यों उठाते हैं? गीता का भगवान कौन? उनके ऊपर फिर अच्छी तरह से रड़ियाँ मारना चाहिए। कोई न कोई वकील भी हाथ में कुछ आते हैं। फिर भी धुन लगाना चाहिए। अख़बारों में डालना चाहिए। वास्तव में ये बात बनाय करके अख़बार में डालना चाहिए। ये जो गीता उठा करके कोर्ट में कसम उठाते हैं, अब प्रश्न उठता है कि गीता का भगवान कौन है– कृष्ण या वो? तुम अपनी ये पहेलियाँ अख़बार में भी तो डाल सकते हैं ना। ...बाबा बोलते हैं ना– भले बड़ा–2 शीट लो। अच्छा, वो तो हम देवें; परन्तु ये पहेलियाँ कम थोड़े ही हैं। पहेलियाँ भी तो देनी पड़े ना। तो देखो, इन

सबकी बात की एक अच्छी कमेटी होनी चाहिए बच्चों की, जिनमें ये बच्चे कभी कहते हैं प्रदर्शनी। तो कोई कमेटी होनी चाहिए, उनको लिख देवें कि हमको प्रदर्शनी करनी है, हमको फलाना टाइम दो। तो वो जो कमेटी होवे, आपस में सब कुछ करे। बाबा से घड़ी–2 पूछेंगे...। ये तो अभी कमेटियाँ होनी चाहिए ना, जिसके हाथ में रहे। सभी उनके ऊपर... कि फलाने समय में फलानी जगह में ये बनाना है, फलानी जगह में प्रदर्शनी करना है। तो सब एक तरफ में लिखें। पीछे कोई कमेटी होनी चाहिए (जो) आपस में फिर लिखा–पढ़ी भी कर सके। कोई दिल्ली में है, कोई वहाँ है; पर दिल्ली है हेडऑफिस सबसे बीच में। तो कमेटी भी वहाँ मुकर्रर होनी चाहिए कि कहाँ–2 कोई सेन्टर ...वहाँ हेडऑफिस को लिख देवे। वो फिर भले बाबा से पूछे। बाबा तो कहेंगे सर्विस करो, जहाँ चाहिए तहाँ करो। आपस में फैसला करे। सर्विस तो बच्चों को करनी है ना। बाबा से क्या पूछेंगे! चित्र वगैरह सभी रहे उन कमेटी के हाथ में। ये जो अभी प्रोजेक्टर भी हो रहा है, कमेटी के हाथ में। अभी वो कमेटी बनानी चाहिए दिल्ली में। वो जो सेमीनार... करके आए हैं, उनसे तो पहले ये भी तो फैसला होना चाहिए ना बच्चों का आपस में मिल करके, जैसे मिलते हैं। मुख्य हैं पाँच/सात बॉम्बे और दिल्ली में। दिल्ली में बहुत हैं। ...आपस में राय कर एक जगह में ठिकाना कर देवे। एक तो देना है हरेक को एक प्रोजेक्टर और प्रदर्शनी। बॉम्बे वाले चाहते हैं तो उनके पास जगह हो तो भले रख सकते हैं। बॉम्बे वालों के पास तो अभी जगह है ही नहीं। चित्र रखने की भी जगह नहीं है, सब यहाँ भेज देते हैं। तो दिल्ली में कोई प्रबंध करके एक जगह ले लेना चाहिए। जब तलक नया मकान बने, 12 महीने के लिए 100/150 रुपये की जगह (में) रख देवें, जहाँ ये कमेटी करे और सामान रखा हुआ हो। अरे, 200 में करे, उसमें कोई हर्जा तो नहीं है। ये दिल्ली में 200 का एक मकान करे, सब सामान उसमें रखा रहे। उनके ऊपर एक मैनेजर खड़ा हो जावे। जैसे आत्मप्रकाश है, और भी बहुत बच्चे हैं जो बिचारे सर्विस करना चाहते हैं। तो बाबा बैठ करके डायरेक्शन्स भी देते हैं कि दिल्ली में एक भल हो, गवर्मेन्ट सैंक्शन करती है ना। चलो बच्ची, ये चित्र वगैरह रखने के लिए तुम 200 रुपये में एक मकान ले लो, जिसमें एक ही बड़ा कमरा हो, ठीक है। उसमें एक किचन हो, जो सभी चित्र उसमें रखे हुए रहें। जो जब भी कोई चाहे तो उनको सप्लाई करे, जब तलक सबके पास, हेड के पास ये प्रोजेक्टर और उनके स्लाइड्स वगैरह मिल जावें। बाबा को लिख देते हैं कि स्लाइड वगैरह...। कमेटी होगी तो आपे ही उनको...। बाबा क्या जाने स्लाइड वगैरह से ! स्लाइड वाले स्लाइड जानते हैं ..... पता नहीं क्या–2 मीटर–2 कहते हैं। कोई प्रोजेक्टर कैसा होता है, कोई कैसा होता है। कोई बिचारा 200 रुपये खर्च करेगा, कोई 500 खर्च करेगा, कोई हज़ार भी खर्च कर देंगे। कोई तो कहते हैं मुझे प्रोजेक्टर चाहिए जो ऑटोमैटिकली चले, जैसे वो बाइसकोप का, सिनेमा का चलता है, ऐसे चाहिए। तो चलो उनको प्रबंध कर देवें। बाबा, ये माँगते हैं। हाँ, भले ले लो और उनके पैसे तुमको हम दे देते हैं या उनसे मँगाकर देते हैं। आसामी हैं, दे देते हैं। चलो, करो प्रबंध। तो एक जगह में होने से वो मेरे से ..... सैंक्शन करता जाऊँगा। तो ये कमेटी होनी चाहिए जो देखे जिस–2 को प्रोजेक्टर हो तो उनको सपोर्ट (सहायता) करके दे देवे। चित्र बनते हैं, स्लाइड्स बनते हैं बॉम्बे में। अभी बाबा को तो मालूम नहीं है ना कि दिल्ली में भी बन सकते हैं या नहीं। सिर्फ बॉम्बे में क्यों बनते हैं! अगर स्लाइड्स के रंगीन वगैरह फिल्म्स चाहिए तो बहुत ही मँगा सकते हैं। जितनी चाहें इतनी मँगा सकते हैं। हाँ, ड्यूटी देनी पड़ेगी ना तो ड्यूटी दे देंगे। कोई व्यापारी को बोलेंगे तो भी तुम मँगाय देंगे। किसको भी लिखेंगे, मँगाय देंगे। तो ये सभी एक कमेटी होनी चाहिए। कमेटी भी अच्छी दो/चार की जो उनकी मूड न फिरे। नहीं तो बहुतों की मूड तो झट फिर जाती है एकदम। थोड़ी–सी बात में तंग होते हैं ना, फिर जैसे लून–पानी हो पड़ते हैं। तो ऐसे लून–पानी अच्छे–2 बने रहते हैं। ये बाबा जानते हैं। वो नहीं समझते हैं। बाबा से लिखकर पूछें तो बाबा कहें; पर ऐसे नहीं कि बाबा कहे तो रूठ जाना चाहिए,

अपना बेड़ा गर्क कर देना चाहिए। कोई तो रूठ जाते हैं ना, पढ़ाई छोड़ देते हैं या ये कर देते हैं, फलाना कर देते हैं। वो तो अपना भी नुकसान करेंगे। वो तो महापापात्मा बन जाते हैं; क्योंकि चलते–2 जो कुछ अच्छा काम करते रहते हैं और फिर रूठकर बंद कर देवे तो कितने का अकल्याण भी करे और अपना भी अकल्याण करे। यहाँ रूठना तो बहुत है। अक्सर करके जो अच्छे–2 ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ हैं, जिनका बाबा बहुत ही अच्छा–2 नाम भी करते हैं, कभी–2 रूठ पड़ते हैं, मूड ही फिर जाती है। शिकल ही फिर एकदम वो जो देवताओं की होती है हर्षित, वो फिरकर जैसे डेड चमार की होती है, ऐसी बन जाती है। तुमको कभी देखना हो तो मैं किसको थोड़ा गुस्सा करके फिर शिकल दिखलाऊँ। तो देखो, कितना फर्क पड़ जाता है एकदम। वहाँ का वहाँ देवता, वहाँ का वहाँ बंदर। वो सूरत तो एक ही होती है; पर सूरत में फर्क देखो फिर कितना आ जाता है, जिनकी मूड फिर जाती है। बात ही मत पूछो एकदम। मेल हो या फिमेल हो, जब मूड फिरता है तो शिकल बिल्कुल देखने जैसी ही नहीं रहती है। ग्लानि होती है जैसे कि ये क्या है! ये देवताओं की शिकल होती है! शिकल....रखनी होती है। हम शिवबाबा के पौत्रे और पौत्री और शिवबाबा से वर्सा लेने वाले; परन्तु देता है ब्रह्मा द्वारा। याद तो फिर भी, ब्रह्मा खुद भी कहते हैं– तुम शिवबाबा को याद करते रहो। मेरे को कभी नहीं याद करना, नहीं तो पापात्मा बन जाएँगे। देखो, कितना अच्छी तरह से समझाते हैं– खबरदार रहना बच्चे ! अगर ब्रह्मा के शरीर को याद किया तो पापआत्मा बन जाएँगे। क्यों? ऐसा कोई होता है क्या कि किसके शरीर को याद करना, पापआत्मा बन जाना ? हाँ बरोबर, सिवाय परमपिता परमात्मा की याद (के) ये सभी पापआत्मा ही पापआत्मा हैं; क्योंकि परमात्मा को वो लोग तो जानते ही नहीं हैं। जबकि हमें बाबा ने बोल दिया कि अभी सिर्फ मामेकम् याद करो। देखो, लिखा हुआ है ना। कृष्ण (ने) तो नहीं कहा है ना– मामेकम् याद करो। नहीं। वो फिर भी कहते हैं– सर्वधर्मान्, सभी धर्म वालों को हम कहते हैं, धर्म वगैरह को छोड़ कि मैं सन्यासी हूँ, मैं क्रिश्चियन हूँ, मैं फलाना हूँ, ये छोड़, मैं आत्मा हूँ और परमपिता परमात्मा की संतान हूँ, ये बाप ने आ करके मुझे समझाया है– तुम बच्चे मेरी संतान हो और अब तुम मुझे याद करो, मैं आया हूँ तुमको पावन बनाने के लिए। अरे, पावन बनने का उपाय तो मैं कल्प–2 समझाता हूँ। हे आत्माएँ! तुम मुझे याद करो। कोई भी देहधारी को याद न करो– न ब्रह्मा, न विष्णु, न शंकर। फिर हम थोड़े ही कहेंगे कि कृष्ण को याद करो या मैं कृष्ण बन करके कोई ज्ञान देता हूँ। ऐसे तो है नहीं। कृष्ण भगवानुवाच ये ज्ञान है ही नहीं। ये तो बड़ी भारी भूल है। तो पहले–2 इस भूल का फैसला। सारी ताकत (लगाकर) इसको समझाना है कि गीता का भगवान मनुष्य नहीं था, गीता का भगवान...भगवान था। गीता का भगवान ब्रह्मा,विष्णु,शंकर देवताएँ भी नहीं थे तो फिर मनुष्य कैसे हो सकते हैं! मनुष्य तो थर्ड ग्रेड में हैं ना। फर्स्ट ग्रेड में बाप है। सेकण्ड ग्रेड में ब्रह्मा,विष्णु,शंकर सूक्ष्मवतन (में)। थर्ड ग्रेड में है मनुष्य सृष्टि, जो चक्कर लगाती रहती है, जो ज़रूर पुनर्जन्म में आती है। उसमें भी नंबर वन जो श्रीकृष्ण हैं वो पूरे 84 जन्म लेते हैं, उनको भगवान कैसे कहेंगे? तो ये भूल है ना। तो सारा अटेन्शन...। ये जो मैगज़ीन वगैरह बनती है, ये तो चिट–चैट है, बिचारा बैठकर कुछ पढ़े...। बाकी तुम लोगों को तो सभी ज्ञान मिलता रहता है ना, जो भी वहाँ जाते हैं। कौन डालते हैं उसमें? ये भी तो यहाँ का बच्चा है ना, वो बैठ करके मैगज़ीन बनाते हैं। उसमें कुछ न कुछ प्वाइंट्स डालते हैं, जो कोई...बैठे तो और कुछ न पढ़े तो बैठ करके मैगज़ीन पढ़े यानी ये एक किताब हो गया। मनुष्य और भी किताब पढ़ते हैं, नॉवेल पढ़ते हैं। तुम फ्री हो तो बैठकर उनको अच्छी तरह से पढ़ो, जो नई प्वाइंट्स धारणा नहीं रहती है। तो प्वाइंट्स का किताब वास्तव में अच्छा है। जैसे बाबा ने उनको लिखा था कि .... मनुष्य क्या कहते हैं, भगवान क्या कहते हैं। वो सबसे अच्छा; क्योंकि वो मनुष्य कहते हैं कि गीता का भगवान कृष्ण है, भगवान कहते हैं कि...। ये फर्स्टक्लास कॉन्ट्रास्ट का किताब। वो कॉन्ट्रास्ट का किताब कोई कम नहीं है। बहुत फर्स्टक्लास किताब है, जो वास्तव में छपना चाहिए। वो और मैगज़ीन। मैगज़ीन जितना टाइम लेगा इतना ये कॉन्ट्रास्ट का किताब इनका टाइम लेगा। अभी उनसे बहुत फायदा है। इनसे इतना फायदा नहीं रहेगा;

क्योंकि उनमें तो ये मनुष्य क्या कहते हैं, पण्डित क्या कहते हैं, शास्त्र क्या कहते हैं, भगवान क्या कहते हैं, वो बड़ी अच्छी है। वो अच्छी तरह से हल्की बना करके फिर हम सौगात भी दे सकते हैं, बड़ी–2 सभाओं में रख सकते हैं। उनमें बहुत अच्छा ज्ञान है। उस सिवाय बाबा ने फिर समझाया है कि बच्चे, जाओ भाषण करो। भाषण तो कोई भी कर सकते हैं; परन्तु बाबा ये समझते हैं कि भाषण कौन कर सकते हैं, वो मेरे से नाम माँगे तो हम दे सकते हैं कि ये–2 मनुष्य ऐसे–2 काम कर सकते हैं। अभी वो सुनते तो रहते हैं, बाबा के दिल पर जो चढ़े हुए हैं। जैसे देखो, वीणानगर की वो लक्ष्मी है, इन्द्र है, मोहिनी है, जगदीश है, गुलज़ार है, मनोहर है, और कौन बताऊँ तुमको ? (किसी ने कहा– रूकमणी) हाँ, रूकमणी भी है। शरीर की भी अवस्था थोड़ी अच्छी चाहिए..। नहीं तो बालक समझकर आजकल कोई देते नहीं हैं। किस बात के लिए बाबा ने कहा? (किसी ने कहा– भाषण के लिए, भाषण कौन–2 कर सकते हैं) (किसी भाई ने कहा– कमेटी में कौन–2 होना है) हाँ, कमेटी में और कौन–2 जा करके भाषण वगैरह कर सकते हैं और कमेटी में कैसे–2 महारथी होने चाहिए, जो ये बातें अच्छी तरह से समझा भी सकें; क्योंकि चले जाना चाहिए अपॉइंटमेंट भी कर–करके कि ये जो गीता का लिखा हुआ है श्रीकृष्ण भगवानुवाच, ये गीता का कृष्ण भगवान, भगवान तो सबका एक ही है। वो भगवान का उवाच है या ये उवाच है? श्रीमत द्वारा पाया हुआ अनुभव कहता है कि गीता जिसमें कृष्ण का नाम रख दिया है, ये पढ़ते–3 भारत बिल्कुल ही दुर्गति को पाया हुआ है और ये श्रीमत है। हम आपसे बात करते हैं, ये बात समझाना चाहते हैं– ये कोर्ट में जो कसम उठाया जाता है या जो गीता के ऊपर कृष्ण का नाम रख दिया है, ये तो बहुत ही...। बाप से गीता द्वारा ये कृष्ण जन्म लिया है और कृष्ण की बायोग्राफी बाप की तरफ में रख दिया है। ऐसी अच्छी एक चिट्ठी लिखकर, आपस में राय करके, फिर भेज देना चाहिए जो हेड्स हैं। पहले–2 तो नंबर वार यही है जो बाप बैठकर कहते हैं कि मेरी बहुत ग्लानि की हुई है। सबसे मुख्य बात। तो सर्वव्यापी का ज्ञान पीछे निकल जावे। वो एकदम लिख देना चाहिए (कि) सर्वव्यापी कहना माना ही बाप की बिल्कुल ग्लानि करना; क्योंकि तुम्हारा नाम तो अभी मशहूर है ना– प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। ऊपर में दिखलाते हो शिव और ब्रह्मा। दिखलाया है शिव ब्रह्मा द्वारा स्थापन कर रहे हैं तो ये ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं। फिर मिल करके भी समझाया जा सकता है। तो जो बड़ी–2 बात है, जिससे तुम्हारा ठका होने का है, जिससे तुम्हारी विजय का डंका बजना है, वो है ये एक। एक तो सर्वव्यापी का ज्ञान भी निकल पड़ेगा और दूसरा बाप का परिचय सबको मिलेगा और वो बाप से वर्सा लेने (का) पुरुषार्थ कर लेंगे। अभी ये तो बाप राय देते रहते हैं, फिर भी कहते रहते हैं कि ड्रामा अनुसार अगर इस समय में ये बाप का नाम बाला होना होगा तो हो जाएगा, बहुतों का जल्दी कल्याण होगा। देरी होगी तो कोई पुरुषार्थ भी नहीं करेंगे और फिर कोई इतना सुनेंगे भी नहीं। नहीं तो हाई डोज तो इसमें मचा देना चाहिए। ये हाई डोज़ है ना। दिल में आता तो है ना बरोबर कि बड़ा रॉंग है, बहुत रॉंग है, बहुत रॉंग है। पहले–2 हम इस बात में तो विजय पहनें ना। ये तो ठीक है, ये छोटी किताब वगैरह निकालते हैं। ये तो निकालते रहते हैं, कुछ मुँह भी नहीं देते हैं; क्योंकि बड़े को पकड़ना पड़े ना। अख़बार में भी डालें कि ये आदि सनातन हिन्दू सभा की कॉन्फ्रेन्स होती है– ये आखिर में गीता का भगवान कौन था? तो ऐसे–2 पुरुषार्थ करना चाहिए ना। देखो, बाबा महारथियों को डायरेक्शन दे रहे हैं। जैसे रमेश है, तो इनका हिन्दू महासभा जाना तो होता है ना। जैसे वो भी लिखता है– हम, हिन्दू महासभा का पेन्डॉल था, उनको भी समझाया। भुट्टू को थोड़े ही समझाना चाहिए जो बस समझा, वो गया, वहाँ की वहाँ रही। नहीं, यहाँ तो बड़ी कॉन्फ्रेन्स करनी चाहिए, खास ये महासभा वाले, आदि सनातन हिन्दू सभा। अभी आदि सनातन हिन्दू तो कोई बात ही नहीं है, आदि सनातन देवता ही थे। बच्चों को याद–प्यार और गुडमॉर्निंग।